हिन्दी वर्णमाला :

स्वर एवं व्यंजन

हिन्दी वर्णमाला में कुल वर्णों की सख्या 46 है।

(i) स्वर = 11
(ii) व्यंजन = 33
(iii) अयोगवाह = 2
कुल वर्ण = 46

वर्ण

स्वर (11)	व्यंजन (33)	अयोगवाह (2)
सु+अर = यण् सन्धि	वि+अंजन (यण् सन्धि)	(न योगवाह)
1. स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वयं उच्चरित होती हैं। परिभाषा – स्वयं राजन्ते इति स्वरा : (पतंजलि)	1. व्यंजन उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वर की सहायता से उच्चरित होती हैं। परिभाषा – अन्वग् भवति इति व्यंजनम् (पतंजलि)	→ योगवाह – योग को वहन करने वाला। → अयोगवाह – जो योग को वहन न करे; अर्थात् जो वर्ण न तो स्वर के योग को वहन करे और न ही व्यंजन के योग का वहन करे, फिर भी भाषा में जिसका योग हो, उन्हें अयोगवाह कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

वर्ण

स्वर (11)	व्यंजन (33)	अयोगवाह (2)
"स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जिनके उच्चारण में 'मुँह' के वायुमार्ग में किसी भी प्रकार की पूर्ण या अपूर्ण रुकावट नहीं होती।" (डॉ भोलानाथ तिवारी)	"व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से बाहर नहीं निकलने पाती या तो इसे पूर्ण अवरुद्ध होकर फिर आगे बढ़ना पड़ता है, या संकीर्ण मार्ग से संघर्ष करते हुए निकलना पड़ता है, मध्य रेखा से हटकर एक या दोनों पार्श्वों से निकलना पड़ता है, या किसी भाग को कंपित करते हुए निकलना पड़ता है। इस प्रकार वायुमार्ग में पूर्ण या अपूर्ण अवरोध उपस्थित होता है।" (डॉ भोलानाथ तिवारी)	→ हिंदी में अयोगवाह वर्णों की संख्या दो ही है।
स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुखविवर से निकल जाती है। इनके उच्चारण में वायु-प्रवाह कहीं अवरुद्ध नहीं होता है।	व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकल पाती है, या तो इसे पूर्ण अवरुद्ध होकर फिर आगे बढ़ना पड़ता है या संकीर्ण मार्ग से घर्षण	

Scanned with CamScanner

वर्ण

स्वर (11)	व्यंजन (33)	अयोगवाह (2)
	खाते हुए निकलना पड़ता है या मध्य रेखा से हटकर एक या दोनों पार्श्वों से निकलना पड़ता है।	अनुस्वार अनु (पीछे) स्वार (स्वर के); अर्थात् वह ध्वनि जो स्वर के पीछे प्रयुक्त हो अनुस्वार कहलाती है। (ं)
स्वरों का उच्चारण देर तक किया जा सकता है।	व्यंजनों में संघर्षी व्यंजनों को छोड़कर शेष का उच्चारण देर तक नहीं किया जा सकता है।	
एक-दो (ई, ऊ) अपवादों को छोड़कर अधिकांश स्वरों के उच्चारण में मुख-विवर में हवा गूँजती हुई बिना किसी विशेष अवरोध के निकल जाती है।	अधिकांश व्यंजन इसके विरोधी हैं और उनमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध हवा के मार्ग में व्यवधान उपस्थित करता है।	
सभी स्वर आक्षरिक होते हैं। सन्ध्यक्षरों में अवश्य कुछ स्वरों का अनाक्षरिक स्वरूप दिखाई पड़ता है; किन्तु यह अपवाद	दूसरी ओर प्रायः सभी व्यंजन सामान्यतः अनाक्षरिक होते हैं।	

Scanned with CamScanner

वर्ण

स्वर (11)	व्यंजन (33)	अयोगवाह (2)
जैसा है।		
स्वर अपेक्षाकृत अधिक मुखर होते हैं।	व्यंजन स्वरों की तुलना में कम मुखर होते हैं।	(:) विसर्ग - स्वर के आगे दो बिन्दु (ऊपर-नीचे) होते हैं। विसर्ग ध्वनि का संबंध मूलतः संस्कृत भाषा से है। हिन्दी में छिः छिः या छः आदि कुछ शब्दों में ही उसका प्रयोग होता है।
स्वर स्वराघात वहन करने की क्षमता से युक्त होते हैं।	व्यंजन स्वराघात वहन नहीं कर सकते हैं।	
सभी स्वर घोष होते हैं।	व्यंजन घोष एवं अघोष दोनों होते हैं।	
सभी स्वर अल्पप्राण होते हैं।	व्यंजन अल्पप्राण एवं महाप्राण दोनों होते हैं।	
स्वरों के उच्चारण में जिह्वा स्वर-सीमा की ऊँचाई से नीचे रहती है।	व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा स्वर-सीमा के ऊपर तक जाती है।	
मात्रा केवल स्वरों की होती है।	व्यंजनों की मात्रा नहीं होती है। संस्कृत में व्यंजनों को अर्ध-मात्रिक माना जाता है।	

Scanned with CamScanner